

अपराध और कार्रवाई

पिछले कुछ समय से रेलों में लूटपाट जैसी आपराधिक घटनाएं बढ़ने के मद्देनजर केंद्रीय गृहमंत्री ने आदेश दिया है कि ऐसी घटनाओं की आनलाइन शिकायत दर्ज करने की व्यवस्था होनी चाहिए। अभी तक लोगों को अपनी शिकायतें दर्ज कराने के लिए रेलवे पुलिस थाना जाना पड़ता है। वहां शिकायत दर्ज होने के बाद उसे राज्य, जिला और संबंधित थाने को भेजा जाता है। इस प्रक्रिया में प्राय: मामला उलझ जाता है, पीड़ितों को नाहक परेशानियां उठानी पड़ती हैं और उन्हें उचित न्याय नहीं मिल पाता। माना जा रहा है कि इससे न सिर्फ मुसाफिरों को सहूलियत होगी, बल्कि रेल सेवा पर उनका भरोसा भी बढ़ेगा। हालांकि रेलों में जीपीएस, आनलाइन सूचनाएं देने, दुर्घटना के समय संदेश भेजने आदि संबंधी सुविधाएं मुहैया कराने का सुझाव पुराना है। कई साल पहले रेल बजट में हर डिब्बे में ऐसे उपकरण लगाने का प्रस्ताव किया गया था, जिनके जरिए मुसाफिर आपात स्थिति में दूसरे स्टेशनों या फिर मुख्यालय तक संदेश भेज सकें। मगर अभी तक उस दिशा में कोई उस्ताहजनक पहल नहीं हो पाई है। यही वजह है कि दुर्घटना या फिर किसी आपराधिक घटना के वक्त समय रहते राहत मुहैया नहीं कराई जा पाती। इसका अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि बिहार में हाल की ट्रेन डकैती करीब दो घंटे तक चली, पर उसे रोकने का कोई उपाय नहीं किया जा सका।

आज तमाम सेवाएं इंटरनेट से जुड़ी तकनीक के सहारे संचालित होने लगी हैं। रेलवे खुद टिकट बुकिंग के मामले में काफी हद तक इस सुविधा का लाभ ले रहा है। रेलवे से जुड़ी जानकारियां उपलब्ध कराने के लिए कई निजी कंपनियों ने अपने सूचना तंत्र विकसित कर लिए हैं, लोग उनका लाभ भी उठा रहे हैं। ऐसे में यह समझना मुश्किल है कि रेल महकमा सुरक्षा संबंधी मामलों में आधुनिक तकनीक का सहारा लेने के प्रति उस्ताहित क्यों नहीं है। अब पुलिस थानों में भी आनलाइन यानी घर बैठे इंटरनेट के जरिए बहुत सारी शिकायतें दर्ज कराई जाने लगी हैं। यातायात में इंटरनेट के जरिए सड़कों पर निगरानी रखी जाने लगी है और यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों पर आनलाइन जुर्माना वगैरह भेजा जाने लगा है। पर हैरानी की बात है कि रेलवे पुलिस अब भी पुरानी लीक पर चल रही है।

रेलगाड़ियों में चोरी की घटनाएं आम हैं। कई बार आपराधिक वृत्ति के लोग ट्रेनों में घुस कर मारपीट करने से भी बाज नहीं आते। वातानुकूलित डिब्बों में सहायक और सुरक्षाकर्मियों की तैनाती का नियम होने के बावजूद उनमें चोरी की घटनाएं नहीं रुक पा रहीं। रात के वक्त प्राय: रोज मोबाइल फोनों की चोरी होती है। पर यात्री चूँकि सफर में होते हैं, वे गाड़ी से उतर कर रेलवे पुलिस थाने जाने के झंझट में नहीं पड़ना चाहते। उनमें बहुत सारे लोग ऐसे होते हैं, जिनके मन में पुलिस थाने जाने को लेकर भय बना रहता है। फिर कई लोग सोचते हैं कि पुलिस में शिकायत दर्ज कराने के बाद उन्हें बार-बार अपना काम-धंधा छोड़ कर थाने और अदालत का चक्कर काटना पड़ेगा, उससे नाहक उनका समय बर्बाद होगा। इसके चलते भी आपराधिक मानसिकता वाले लोग बेखोफ होकर रेलों में चोरी, डकैती जैसी घटनाओं को अंजाम देते हैं। ऐसे में अगर रेलों में ऐसी सूचना प्रणाली लगाई जाए, जिससे न सिर्फ मुसाफिर शिकायतें दर्ज करा सकें, बल्कि अपराधियों को पकड़ने में भी मदद मिले, तो रेल सेवाओं के प्रति निस्संदेह लोगों में विश्वास बढ़ेगा।

ठंड की मार

हर साल सर्दी में सरकार बेघर लोगों के लिए रैनबसेरा या आश्रय मुहैया कराने का आश्वासन देती है। कुछ तात्कालिक उपाय किए भी जाते हैं। पर लगता है कि इस तरह की औपचारिक गतिविधियों का असर सीमित ही रहता है। वरना क्या वजह है कि राहत पहुंचाने के तमाम दावों के बावजूद ठंड की मार से मरने वालों की तादाद चिंताजनक आंकड़े तक पहुंच जाती है। मसलन, इस साल महज दो हफ्ते के दौरान छिथानबे लोगों की जान इसलिए चली गई कि वे बेघर थे और उनके पास ठंड से बचने के न्यूनतम इंतजाम भी नहीं थे। यहां यह सोचने की जरूरत है कि हमारी सरकारों की नजर में बेहद गरीब लोगों के लिए क्या जगह है और उनके लिए बनाई नीतियों और समाज कल्याण कार्यक्रमों की जमीनी हकीकत क्या है। परेशान करने वाली यह रिपोर्ट एक गैरसरकारी संगठन सीएचडी यानी सेंटर फॉर होलिस्टिक डेवलपमेंट के एक अध्ययन में सामने आई है। सीएचडी का कहना है कि ये आंकड़े दरअसल गृह मंत्रालय की वेबसाइट से निकलवाए गए हैं। यों संगठन के आंकड़ों के मुताबिक पिछले साल दिसंबर से लेकर अब तक कुल सवा तीन सौ से ज्यादा लोगों की मौत ठंड से हो चुकी है।

ये सब लोग बेघर थे, जो राजधानी दिल्ली में काम की तलाश में आ जाते हैं। दिल्ली देश की राजधानी है और अगर यहां हालत यह है तो देश के बाकी हिस्सों में ऐसे बेघर लोगों की मुश्किलों का सिर्फ अंदाजा ही लगाया जा सकता है। ऐसे तमाम लोग हैं जो सिर्फ इसलिए अपने गांव या दूरदराज के इलाकों से दिल्ली जैसे शहरों या महानगरों में आ जाते हैं, ताकि खुद या अपने परिचार के जिंदा भर रह सकने लायक कुछ कमा सकें। लेकिन चूँकि उनके पास कोई ठिकाना नहीं होता है, इसलिए खुले आसमान के नीचे रात गुजारना उनकी मजबूरी होती है। गर्मी या दूसरे मौसम में तो किसी तरह उनका वक्त कट जाता है, लेकिन कड़ाके की ठंड में एक रात का सुरक्षित निकल जाना उनके लिए असीम राहत का मामला होता है। ठंड में ऐसी जानलेवा चुनौती का सामना करने वाले लोगों की तादाद लाखों में है। सवाल है कि अगर इन निराश्रित लोगों के सामने अभाव एक लाचारी है, तो एक कल्याणकारी मूल्यों पर चलने वाली लोकतांत्रिक सरकार की क्या जिम्मेदारी बनती है ?

तकरीबन सात साल पहले सुप्रीम कोर्ट ने इस मसले पर सभी राज्य सरकारों को साफ शब्दों में निर्देश दिया था कि कड़ाके की ठंड की वजह से एक भी व्यक्ति की मौत नहीं होनी चाहिए। इसके लिए सरकारें बेघर लोगों के बचाव के लिए रैनबसेरों की समुचित व्यवस्था करें। लेकिन ऐसा लगता है कि इस तरह के हर मामले में औपचारिकता पूरी कर लेने को सरकार काफी मानती है। गरीबी और अभाव से दो-चार लोगों की मुश्किलों का हल सरकार की प्राथमिकता सूची में शामिल नहीं हो पाता है। यह बेवजह नहीं है कि अमूमन हर साल कड़ाके की ठंड की मार से काफी तादाद में लोगों की जान चली जाती है। जबकि अकेले पर्याप्त रैनबसेरों का इंतजाम ही बहुत सारे लोगों को मौत के मुंह में जाने से बचा सकता है। कंबल या गर्म कपड़े मुहैया करा कर भी बहुत सारे लोगों का जीवन आरामदेह बनाया जा सकता है। यह एक सभ्य और संवेदनशील समाज के लिए मानवीयता का तकाजा है। सरकारों की यह जिम्मेदारी है कि वह ऐसे इंतजाम करे, ताकि एक भी व्यक्ति की मौत मौसम की वजह से न हो।

कल्पमेधा

यह दुनिया दुर्जनों की दुष्टता की वजह से उतनी पीड़ित नहीं है जितनी कि सज्जनों की निष्क्रियता के मारे पीड़ित है ।
 –रोम्यां रोलां

जनसत्ता

जनसत्ता एक भारतीय समाजवादी दैनिक समाचार पत्र है, जो मुम्बई में मुम्बई टाइम्स लिमिटेड द्वारा प्रकाशित किया जाता है।

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अभिषेक कुमार सिंह

अभिषेक कुमार सिंह एक भारतीय समाजवादी दैनिक समाचार पत्र हैं।

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

खनन प्रभावित लोगों को बचाने के लिए कानूनों की कमी नहीं है, समस्या उन्हें लागू करने की है। खनन माफिया और राजनीतिक गटजोड़ के चलते ही ऐसे कानूनों की अनदेखी होती है, जिसका नतीजा है कि देश में अधिकृत दो हजार छह सौ खनन गतिविधियों में मानवाधिकार और पर्यावरण सुरक्षा को भारतीय कानूनों के अनुरूप सुनिश्चित करने में सरकार की पूरी व्यवस्था ही विफल हो गई है ।

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

एक तरफ जब उत्तर प्रदेश में खनन घोटाले को लेकर सियासी माहौल गरमाया हुआ है, देश के सुदूर उत्तर-पूर्व में महीने भर पहले हुए खदान हादसे को देख कर लगता ही नहीं है कि वहां फंसे पंद्रह मजदूरों की किसी को कोई फिक्र भी है। मेघालय के जयंतिया हिल्स जिले के एक गांव शान के नजदीक तीन सौ सत्तर फीट गहरी अवैध कोयला खदान यानी भरने के कारण धंस गयी थी और उसमें ये मजदूर फंस गए थे। एक तो इस हादसे की सूचना ही देर से मिली, फिर उसके बाद बचाव कार्य भी इतनी सुस्ती के साथ शुरू किए गए जिससे यही साफ हुआ कि बेहद निचले तबके से आने वाले पंद्रह मजदूरों की जान की परवाह किसी को नहीं थी। वरना क्या वजह थी कि जब यह मामला सुप्रीम कोर्ट में गया और उसने भी राज्य सरकार को फटकार लगाते हुए कहा कि मजदूरों की जान बचाने को एक-एक सेकंड कीमती है, उसके बावजूद उन मजदूरों का अब तक

खनन हादसों में दबे सवाल

कोई सुराग तक नहीं मिला है ।

मेघालय के इस खान हादसे को एक महीना बीत गया है। अब यह अंदाजा लगाना मुश्किल नहीं है कि आखिर उन मजदूरों का क्या हुआ होगा। यह मामला जहां हमारी सामाजिक-राजनीतिक संवेदना पर कुठाराघात है, वहीं इससे यह सवाल भी उठा है कि आखिर हमारे देश में खनन उद्योग को लेकर इतने कुहासे क्यों छाप हुए हैं। खासतौर से यह देखते हुए कि एक तरफ यह उद्योग भारी भ्रष्टाचार को जन्म दे रहा है, तो दूसरी ओर इसमें काम करने वाले मजदूरों के हितों की किसी को कोई परवाह ही नहीं है। मेघालय की रैट होल खदान में मजदूरों के साथ जो हादसा हुआ है, वह कोई नया नहीं है। यहां पहले भी ऐसी दुर्घटनाएं हुई हैं। एक हादसा 1992 में मेघालय के दक्षिण गारो हिल्स जिले में हुआ था, तब तीस मजदूर खदान के अंदर फंस गए थे और उनमें से आधे मारे गए थे। इसी जिले में 2012 में खदान के अंदर फंसे चौदह बाल मजदूरों की लाशों को आज तक नहीं निकाला जा सका।

अवैध खनन के कारण इस पर्वतीय राज्य के नष्ट होते पर्यावरण और नदियों की दुर्दशा के मद्देनजर राष्ट्रीय हरित पंचाट (एनजीटी) ने अप्रैल 2014 से वहां कोयला खनन और ढुलाई पर रोक लगा दी थी। इसके बावजूद अवैध ढंग से वहां खनन कार्य होता रहा और पर्याप्त सुरक्षा के बिना मजदूरों को खदानों में भेजा जाता रहा है। रैट होल खदानों से कोयला निकालने की क्या मजबूरी है और ये खानें इतनी जोखिमपूर्ण क्यों हैं, इसके जवाब यहां की सामाजिक और भौगोलिक संरचनाओं में छिपे हैं। असल में, बेरोजगारी की मार से जूझ रहे मेघालय के ज्यादातर ग्रामीण इलाकों के युवाओं के पास कोयला खदानों में काम करने के अलावा कोई रोजगार नहीं है। ऐसे में वे खतरनाक अवैध खदानों में काम करने को मजबूर हैं। स्थानीय युवाओं के अलावा कोयले की इन खानों में उतारने के लिए नेपाल और पड़ोसी राज्यों से बच्चे बाल मजदूर के रूप में लाए जाते रहे हैं।

यहां अरसे से कोयला माफिया सत्ता पर हावी रहा है, इसलिए इसके आतंक के आगे हर कोई चुप है। हालत यह है कि जयंतिया हिल्स इलाके में ही पांच हजार से ज्यादा अवैध कोयला खानें हैं, लेकिन उन पर प्रशासन का कोई नियंत्रण नहीं है। ऐसे में जब तक कोई बहुत ही बड़ा मामला न हो, तब तक उसकी पुलिस में रिपोर्ट भी नहीं लिखी जाती।

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अभिषेक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

संजय ठाकुर

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

आम और खास के फर्क को देखना हो तो ‘बंधित मार्गों के शहर’ शिमला के ‘सामान्य’ आचार-व्यवहार के नियमों में देखा जा सकता है। सड़कों पर चलने के सामान्य नियम तो यहां भी वही हैं जो देश के दूसरे क्षेत्रों में हैं, लेकिन बाद वाहन ले जाने की हो तो यहां के नियम जरा हट कर हैं। राष्ट्रीय उच्च मार्ग और कांस्ट रोड जे नाम से प्रचलित एक मार्ग को छोड़ कर शिमला शहर के शेष सभी मार्ग वाहनों की दृष्टि से बंधित मार्ग हैं। विशेष परिस्थितियों में इन मार्गों पर वाहनों की आवाजाही के लिए परमिट सुविधा दी गई है, जिसके लिए भारी फीस वसूली जाती है। शहर की साफ-सुथरा और यहां की सड़कों को पैदल चलने वालों के लिए सुरक्षित रखने की दृष्टि से यह एक अच्छा विचार है, लेकिन यह बात तब अखरती है जब मार्ग-बंधन के ये नियम धन और शक्ति के आगे धरे के धरे रह जाते हैं। कोई भी व्यक्ति धन, प्रशासन या सत्ता का रसूख दिखा कर नियमों की धज्जियां उड़ाता इन मार्गों पर कहीं भी वाहन दौड़ा सकता है। इस तरह ये नियम आम आदमी के लिए ही रह जाते हैं। आम लोगों के लिए परमिट का यह नियम कहीं

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

मुनाफे का इलाज

भारत में चिकित्सा, खासकर दवाइयों के क्षेत्र में विदेशी कंपनियों का बोलबाला है। दवा बनाने वाली कंपनियां अपने प्रतिनिधियों के जरिए डॉक्टरों को अपनी ब्रांडेड दवा लिखने के लिए खासे लाभ देती हैं। इसी आधार पर डॉक्टरों के नजदीकी मेडिकल स्टोर को दवा की आपूर्ति होती है। दवा विक्रेताओं को भी ब्रांडेड दवाओं की बिक्री पर कमीशन मिलता है। यही वजह है कि ब्रांडेड दवाओं का कारोबार दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। विदेशी व निजी कंपनियां दवाइयों के अनुसंधान, पेटेंट और विज्ञापन पर बड़ी रकम खर्च करती हैं, जिसके कारण दवाओं का दाम बढ़ जाता है और इसका सबसे अधिक असर आम जनता पर हो रहा है।

राहत की बात यह है कि इस महंगाई से बचने का सुगम विकल्प उपलब्ध है। यह विकल्प है, जेनेरिक दवाइयां। जेनेरिक दवाइयां ब्रांडेड या फार्मा की दवाइयों के मुकाबले सस्ती होती हैं, जबकि प्रभावशाली उनके बराबर ही होती हैं। जेनेरिक दवाइयों को भी बाजार में लाने का लाइसेंस मिलने से पहले गुणवत्ता मानकों की सभी सख्त प्रक्रियाओं से गुजरना होता है। इन दवाओं के प्रचार-प्रसार पर कंपनियां कुछ खर्च नहीं करतीं। जेनेरिक दवाओं के मूल्य निर्धारण पर सरकारी अंकुश होता है, इसलिए वे सस्ती होती हैं, जबकि पेटेंट दवाओं की कीमत कंपनियां खुद तय करती हैं, इसलिए वे महंगी होती हैं।

विष्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार यदि डॉक्टर मरीज को जेनेरिक दवाएं लेने की सलाह देने लगे तो केवल धनी देशों में चिकित्सा व्यय में सरत्र प्रतिशत तक कमी आएगी और गरीब देशों के चिकित्सा व्यय में यह कमी और भी ज्यादा होगी। कई बार तो ब्रांडेड और जेनेरिक दवाओं की कीमतों में नब्बे प्रतिशत तक

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

श्रमिकों की भी आर्थिक स्थिति अच्छी हो सके। इसमें भी संदेह नहीं है कि मेघालय में एनजीटी द्वारा प्रतिबंध के बाद लोगों की आर्थिक स्थिति खराब हो गई, जिसके बाद खदान मालिकों ने अवैध ढंग से कोयला निकालने का काम शुरू कर दिया।

मेघालय के मुख्यमंत्री कोनराॅड सांम्ला ने इसी तथ्य के मद्देनजर कोयला खनन पर लगी पाबंदी के मुद्दे का हल खोजने की कोशिश की बात कही थी। हालांकि उन्होंने इसके लिए कानूनी प्रक्रिया अपनाने की बात उठाई थी। इसकी वजह यह है कि ऐसा करने में खर्च है, क्योंकि इसके लिए पर्याप्त उपकरणों की जरूरत होती है, मजदूरों की सुरक्षा के नियम-कायदे अपनाए जाते हैं और इसमें खनन के लिए बंद घोषित खदानों को खुला नहीं जाता है। मेघालय सरकार को कोयला खनन से सालाना सात सौ करोड़ रुपए का राजस्व मिलता है। ऐसे में यदि कानून सम्मत प्रक्रिया अपनाई जाती है तो खर्च और कमाई का यह आंकड़ा काफी हद तक बदल जाएगा। इसीलिए कोई सरकार कानूनी प्रक्रिया पर आगे नहीं बढ़ना चाहती है।

रैट होल खदानें पारंपरिक खदानों के मुकाबले बेहद संकरी और चुंई के बिल की तरह होती हैं जिनमें श्रमिक लौट कर घुसते हैं और कोयला निकालते हैं। ये मजदूर अंदर जाकर तब तक खुदाई करते हैं, जब तक कि कोयले की परत नहीं मिल जाती है। कोयला नहीं मिलने की सूरत में मजदूर खुदाई करते हुए 100 से 400 फीट की गहराई में भी चले जाते हैं, जहां खदान धंसने की स्थिति में उनकी जान खतरे में पड़ जाती है। बहरहाल, अब ज्यादा बड़ी चिंता यह है कि मेघालय हादसे से ऐसा क्या सबक लिया जाए कि भविष्य में ऐसे हादसों की पुनरावृत्ति न हो। खनन प्रभावित लोगों को बचाने के लिए कानूनों की कमी नहीं है, समस्या उन्हें लागू करने की है। खनन माफिया और राजनीतिक गटजोड़ के चलते ही ऐसे कानूनों की अनदेखी होती है, जिसका नतीजा है कि देश में अधिकृत दो हजार छह सौ खनन गतिविधियों में मानवाधिकार और पर्यावरण सुरक्षा को भारतीय कानूनों के अनुरूप सुनिश्चित करने में सरकार की पूरी व्यवस्था ही विफल हो गई है। भारत में खनन व्यवसाय की नियंत्रित करने के बारे में बने ज्यादातर कानून 1950 के दशक के हैं और वे आज की आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं रह गए हैं। अब जरूरी है कि सरकार कानूनों को ठीक तरह से लागू करे और खनन गतिविधियों की समुचित निगरानी करे।

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया

अन्वेषक कुमारेसिंह, जो 1910 में क्रायोलोलाइट खनिज का अन्वेषण किया